<u>अत्यंत गोपनीय-केवल आंतरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु</u>

सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट टर्म – II परीक्षा, 2022

अंक-योजना

हिंदी (ऐच्छिक)

विषय कोड--002

प्रश्न-पत्र कोड--29/5/2

सामान्य निर्देश:-

1. आप जानते हैं कि परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी भूल भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा- प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को पढ़ और समझ लें।

2. मूल्यांकन नीति एक गोपनीय नीति है क्योंकि यह आयोजित परीक्षाओं की गोपनीयता, किये गए मूल्यांकन तथा कई अन्य पहलुओं से संबंधित है | इसका किसी भी तरह से सार्वजनिक रूप से लीक होना परीक्षा- प्रणाली के पटरी से उतरने का कारण बन सकता है और लाखों परीक्षार्थियों के जीवन और भविष्य को प्रभावित कर सकता है | इस नीति /दस्तावेज को किसी को भी साझा करना, किसी पत्रिका में प्रकाशित करना और समाचार पत्र/वेबसाइट आदि में छापना IPC के तहत कार्यवाही को आमंत्रित कर सकता है |

3. मूल्यांकन अंक-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही किया जाना चाहिए, अपनी व्यक्तिगत व्याख्या या किसी अन्य धारणा के अनुसार नहीं। यह अनिवार्य है कि अंक-योजना का अनुपालन पूरी तरह और निष्ठापूर्वक किया जाए। हालाँकि, मूल्यांकन करते समय नवीनतम सूचना और ज्ञान पर आधारित अथवा नवाचार पर आधारित उत्तरों को उनकी सत्यता और उपयुक्तता को परखते हुए पूरे अंक दिए जाएँ।

4. मुख्य परीक्षक प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता के द्वारा पहले दिन जाँची गई पाँच उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन की जाँच ध्यानपूर्वक करे और आश्वस्त हो कि मूल्यांकन-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही मूल्यांकन किया जा रहा है। परीक्षकों को बाकी उत्तर- पुस्तिकाएँ तभी दी जाएँ जब वह आश्वस्त हो कि उनके अंकन में कोई भिन्नता नहीं है।

5. परीक्षक सही उत्तर पर सही का निशान (√) लगाएँ और गलत उत्तर पर गलत का (×) । मूल्यांकन-कर्ता द्वारा ऐसा चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए। परीक्षकों द्वारा यह भूल सर्वाधिक की जाती है।

6. यदि किसी प्रश्न का उपभाग हो तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दायीं ओर अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग बायीं ओर के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए। इसका अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाए।

7. यदि किसी प्रश्न का कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए। इसके अनुपालन में भी दृढ़ता बरती जाए।

8. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों उन्हें ही स्वीकार करें/ उन्हीं पर अंक दें।

9. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर अंक न काटे जाएँ।

10. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने 0 – 40 (उदाहरण 0--40 अंक जैसा कि प्रश्न-पत्र में दिया गया है) का प्रयोग अभीष्ट है अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।

11. प्रत्येक परीक्षक को पूर्ण कार्य-अवधि में अर्थात 8 घंटे प्रतिदिन अनिवार्य रूप से मूल्यांकन कार्य करना है और प्रतिदिन मुख्य विषयों की 30 उत्तर-पुस्तिकाएँ तथा अन्य विषयों की 35 उत्तर पुस्तिकाएँ जाँचनी हैं। (विस्तृत विवरण 'स्पॉट गाइडलाइन' में दिया गया है)

12. यह सुनिश्चित करें कि आप निम्नलिखित प्रकार की त्रुटियाँ न करें जो पिछले वर्षों में की जाती रही हैं-
   - उत्तर पुस्तिका में किसी उत्तर या उत्तर के अंश को जाँचे बिना छोड़ देना।
   - उत्तर के लिए निर्धारित अंकों से अधिक अंक देना।
   - उत्तर में दिए गए अंकों का योग ठीक न होना।
   - उत्तर-पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण पृष्ठ पर सही अंतरण न होना।
   - आवरण पृष्ठ पर प्रश्नानुसार योग करने में अशुद्धि।
   - योग करने में अंकों और शब्दों में अंतर होना।
   - उत्तर पुस्तिकाओं से ऑनलाइन अंकसूची में सही अंतरण न होना।
   - कुल अंकों के योग में अशुद्धि।
   - उत्तरों पर सही का चिह्न (√) लगाना किंतु अंक न देना।

MARKING SCHEME

Senior Secondary School Examination

Term–II, 2022

हिन्दी ऐच्छिक (विषय कोड : 002)

[पेपर कोड : 29/5/2]

समय: 2 घंटे **पूर्णांक**: 40

सामान्य निर्देश :

- अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं, ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।
- यदि परीक्षार्थी इन संकेत-बिंदुओं से भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दें, तो उसे अंक दिए जाएँ।
- उचित उत्तर दिए जाने पर पूर्णांक भी दिए जा सकते हैं।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक-योजना के निर्देशानुसार ही किया जाए।

Q. No.	EXPECTED ANSWER / VALUE POINTS	Marks
	Set—B2 **खण्ड—क**	
1.	किसी **एक** शीर्षक पर लगभग *150* शब्दों में रचनात्मक लेख : • भूमिका—1 अंक • विषयवस्तु—3 अंक • भाषा—1 अंक	5×1 5
2.	**दो** में से किसी **एक** विषय पर पत्र लेखन (लगभग *120* शब्दों में) : • आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ—1 अंक • विषयवस्तु—3 अंक • भाषा—1 अंक	5×1 5

3.	प्रश्नों के अपेक्षित उत्तर:- (शब्द-सीमा लगभग *50* शब्द) (क) • कहानी या नाटक में पात्रों के कथोपकथन को संवाद कहते हैं। • संवाद कहानी को, पात्रों को स्थापित, विकसित करते हैं और कहानी को गति देते हैं, आगे बढ़ाते हैं। जो घटना या प्रतिक्रिया कहानीकार होती हुई नहीं दिखा सकता, उसे संवादों के माध्यम से सामने लाता है। • संवाद छोटे, स्वाभाविक और उद्देश्य के प्रति सीधे लक्षित होने चाहिए। *(कोई तीन अपेक्षित बिंदु स्वीकार्य)* **अथवा** • नाटककार अपनी रचना को भूतकाल अथवा भविष्यकाल से उठाए, इन दोनों ही स्थितियों में उसे नाटक को वर्तमान काल में ही संयोजित करना होता है। • दर्शकों को जोड़कर रखने के लिए • नीरसता से बचने के लिए • नाटक में दोनों ही काल में घटित घटनाओं को दर्शकों के सामने घटित होना होता है। *(कोई तीन अपेक्षित बिंदु स्वीकार्य)* (ख) • नाटक अपने लिखित रूप में सिर्फ एक आयामी होता है। जब उस नाटक का मंचन हमारे सामने आता है तब जाकर उसमें संपूर्णता आती है। नाटक पढ़ने, सुनने के साथ-साथ देखने के तत्त्व को भी अपने भीतर समेटे है इसलिए इसे 'दृश्यकाव्य' की संज्ञा दी जाती है। **अथवा** • द्वंद्व कथानक को आगे बढ़ाता है। • कथानक को रोचक बनाता है। • पाठक को अंत तक बाँधे रखता है।	(3×1)+ (2×1) 5

4.	प्रश्नों के अपेक्षित उत्तर (शब्द-सीमा लगभग *50* शब्द) : (क) • धन हर आदमी के जीवन का मूलाधार • धन से जीविका का सीधा संबंध • हम बाज़ार से कुछ खरीदते है, बैंक में पैसे जमा करते हैं, बचत करते हैं। किसी कारोबार के बारे में योजना बनाते हैं, जिसमें आर्थिक फायदे, नफा-नुकसान की बात होती है, तो इन सबका कारोबार और अर्थ जगत् से संबंध जुड़ता है। यही कारण है इनसे जुड़ी खबरों में पाठकों की रुचि होती है। **अथवा** • खेलों के बारे में लिखने वालों के लिए ज़रूरी है कि वे खेल की तकनीक, उसके नियमों उसकी बारीकियों और उससे जुड़ी तमाम बातों से भलीभाँति परिचित हों • एक खेल पत्रकार को जानकारियों को दिलचस्प तरीके से पेश करना आना चाहिए। • उसकी भाषा-शैली में ऊर्जा, जोश, रोमांच और उत्साह दिखना चाहिए। (ख) • भाषा के सहारे किसी घटना या भाव पर विचार करना और उस विचार को व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुसंगठित रूप से प्रस्तुत करना • मौलिक विचारों को संकलित कर उन्हें सुन्दर और सुघड़ ढंग से प्रस्तुत करने की चुनौती • किसी भी घटना को देख कर अनुभूत भाव को भाषा में व्यक्त करने की चुनौती **अथवा** • आत्मनिर्भर होकर लिखित रूप में अभिव्यक्ति का अभ्यास न होने के कारण। • तैयार-शुदा सामग्री की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता और उस पर निर्भरता अधिक होने के कारण • मौलिक चिंतन और भावाभिव्यक्ति का अभाव	(3×1)+ (2×1) 5

	खण्ड-ख	
5.	किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग 50--*60* शब्द) : (क) **भाव-सौंदर्य** -- • नायिका के प्रेम संबंधी अनुभवों के उदात्त रूप का वर्णन • प्रेम, अनुभूति का विषय, अभिव्यक्ति का नहीं • प्रेम की अद्भुत अनुभूति **शिल्प-सौंदर्य--** • मैथिली भाषा • श्रृंगार रस का संयोग पक्ष • पद छंद • माधुर्य गुण • गेयता और संगीतात्मकता का गुण • 'स्रवनहि सूनल स्रूति' में 'स' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार • 'सेहो मधुर .... गेल' में विशेषोक्ति अलंकार • अतिशयोक्ति (ख) • चित्रकूट में राम के सम्मुख भरत की मनोदशा का वर्णन और अपनी सत्यता स्थापित करना • उनका कहना है कि उन्होंने जो कुछ भी चित्रकूट की सभा में कहा है वह पूर्ण सत्य है जिसमें छल-कपट या झूठ, मुनि वशिष्ठ जी और अंतर्यामी श्री राम भली-भांति जानते हैं। इससे अधिक भरत कुछ और नहीं कहना चाहते। (ग) • प्रिय की अनुपस्थिति में कँपकँपाती सर्दी, वर्षा और पवन का बहना नागमती की विरह-वेदना को बढ़ा रहा है। • नागमती के प्रिय रत्नसेन रूपी सूर्य के ताप के बिना जाड़ा समाप्त ही नहीं होता। • इस महीने में लताएँ पुष्पित होती हैं लेकिन नागमती जो विरह-अग्नि में जल रही है उसके यौवन पुष्प का रसपान करने के लिए नायक रूपी भ्रमर उपस्थित नहीं है। • इस महीने में पाले की बूँदें नागमती को शूल जैसी लगती हैं। • प्रिय के बिना श्रृंगार निरर्थक लगता है। • नागमती का शरीर तिनके के समान हो गया है जिसे विरह रूपी पवन उड़ा ले जाना चाहता है।	3×2 6

6.	किसी **एक** प्रश्न का उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग *30–40* शब्द) : (क) राम और भरत के बीच भ्रातृ-प्रेम का उदात्त स्वरूप तुलसीदास ने प्रस्तुत किया है। जहाँ त्याग, समर्पण की भावना है। लोभ-लालच, राज-सुख की अभिलाषा नहीं है। वर्तमान समय में भ्रातृ-प्रेम के इस उदात्त स्वरूप को हम अपने समाज में नहीं पाते। भौतिक समृद्धि औऱ प्रतिस्पर्धा ने व्यक्ति को स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित बना दिया है। व्यक्तिगत सुख-सुविधा के लिए संबंधों में बनावटीपन आ गया है। समाज में भाई-भाई के बीच औपचारिक संबंध दिखाई देता है। (ख) बारहमासा की नायिका विरह से पीड़ित है। होली के अवसर पर अपनी सखियों को 'फाग' खेलते देखकर उसकी विरह अग्नि और बढ़ जाती है। उसे लगता है मानो उसके हृदय में अग्नि जल रही हो। उसकी अग्नि और जलन केवल उसका प्रिय ही शांत कर सकता है। नायिका विरह रूपी ताप में और अधिक संतप्त होती जाती है।	2×1 2

7.	किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग *50–60* शब्द) : (क) प्रमाण से अधिक महत्त्व विश्वास का है। छोटे जानवर अभावग्रस्त, दुर्बल और कमज़ोर जनता का प्रतीक हैं शेर व्यवस्था का प्रतीक है जिसका उन्हें विश्वास दिलाया गया है। एक ऐसा विश्वास जिसके सामने प्रमाण का भी कोई अर्थ नहीं था। गधा सोचता था कि हरी-हरी घास है। लोमड़ी सोचती थी कि शेर के मुँह में रोजगार का दफ्तर है। उल्लू को शेर के मुँह में स्वर्ग दिखाई देता था, उसके लिए यही निर्वाण का रास्ता था। शेर को सहअस्तित्ववाद औऱ अहिंसा का ज़बरदस्त समर्थक बताया गया था। वह जंगली जानवरों का शिकार नहीं करता था, वे स्वयं उसके पास चले आते थे। (ख) • उनके घर, उनकी जमीन, उनके खेत-खलिहान विकास और प्रगति की भेंट चढ़ जाते हैं। • उन्हें घर और कारोबार को छोड़कर हमेशा के लिए अनजान स्थान के लिए पलायन करना पड़ता है। • औद्योगीकरण की आँधी में उसका परिवेश और आवास हमेशा के लिए छूट जाता है। • प्राकृतिक आपदा उन्हें कुछ समय के लिए विस्थापित करती है, घर-जमीन और कारोबार से हमेशा के लिए अलग नहीं करती । (ग) • 'गंगा-मैया' के सहारे अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करने वाले लोगों को गंगा-पुत्र कहा गया है। • जीविकोपार्जन के लिए इन्हें कठिन परिश्रम करना पड़ता है। जान को जोखिम में डालना पड़ता है। • भक्तों द्वारा गंगा-मैया को चढ़ावे के रूप में अर्पित पैसों को प्राप्त करने के लिए गंगा के तेज बहाव का सामना करना पड़ता है। अनेक बार दीपकों से लगने वाली आग को भी झेलना पड़ता है। • गंगा के किनारे परिवार-सहित दीप-फूल और रेजगारी का व्यापार करते हैं।	3×2
		6

8.	किसी **एक** प्रश्न का उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग *30–40* शब्द) : (क) • प्रकृति द्वारा मनुष्य की चिंता के कारण पेड़ों द्वारा मूक सत्याग्रह करना • प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण क्षेत्र के तहस-नहस होने के बाद के जीवन की कल्पना करना • लेखक ने आज तक शहरों में यह तो देखा था कि गाँव से विस्थापित होकर लोगों को किस तरह की गंदी बस्तियों में, भयावह और स्लम्स की ज़िन्दगी बितानी पड़ती थी परन्तु आज उन्होंने पहली बार देखा था कि विस्थापन से पहले वे कितने स्वच्छ परिवेश में कितनी अच्छी ज़िन्दगी बिताते हैं। (ख) • जनता को राज्य के यथार्थ स्वरूप से अनभिज्ञ रखना • निर्विरोध व्यवस्था बनाए रखने के लिए • व्यवस्था में हस्तक्षेप न हो • बन्द आँखों वाली प्रजा न देखेगी और न विरोध करेगी।	2×1 2
9.	किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग *30–40* शब्द) : (क) डियर पार्क में बत्तखों को अपने अंडे सेते देख, उनकी रक्षा करते देख लेखक यह सोच रहा था कि उसकी माँ और बत्तख को इतनी ममता किसने दी? गतिमान हवा और पानी की तरह माँ में बच्चे की ममता भी स्वाभाविक है। ईश्वर ने इस सृष्टि में कुछ भी निरुद्देश्य नहीं बनाया, इसके पीछे कोई उद्देश्य अवश्य होगा। (ख) नर्मदा नदी के आस-पास ओंकारेश्वर में सीमेंट कंकरीट का विशाल राक्षसी बाँध बनाया जा रहा था। कहीं छिछलापन था तो कहीं क्रोधवश फिनफिन करती बह रही थी। बड़ी-बड़ी नावें भी वहाँ नही थीं। शायद पूर्व में बहने से बचा कर कहीं रख दी गई थीं। किनारों पर टूटे पत्थर पड़े थे। वह ज्योतिर्लिंग का तीर्थधाम नहीं लग रहा था। निर्माण के लिए मशीनें और गुर्राते ट्रक खड़े थे। लेकिन नर्मदा के बार-बार पूर आने के निशान चारों तरफ थे। इतने बाँधों के बावजूद भी नर्मदा में खूब पानी और गति थी। (ग) • भारतीय ग्रामीण परिवेश की संपन्नता, सौंदर्य तथा पारंपरिक ज्ञान पर प्रकाश • ग्रामीणों का प्रकृति से सीधा जुड़ाव • जीवन के प्रति संघर्ष और सकारात्मकता • वहाँ सौंदर्य के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाएँ भी ग्रामीण जीवन का अंग बन गई थी।	2×2 4

* * *